प्रातः क्लास 7-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप ने अर्थ तो बच्चों को समझाया है। मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूं। जब ओमशान्ति कहा जाता है तो आत्मा को अपना घर याद आता है। मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूं। फिर जब आरगन्स मिलते हैं तब टाकी बनते हैं। पहले छोटी आरगन्स होती है फिर बड़ी होती है। अब परम पिता परमात्मा है निराकार। उनको भी रथ चाहिए टाकी बनने लिये। जैसे तुम आत्माएं रहने वाली परमधाम के हो। यहां आकर टाकी बनते हो। बाप भी कहते हैं तुमको नालेज देने लिये मैं भी टाकी बना हूं। बाप अपना और रचना के आदि मध्य अन्त का परिचय देते हैं। यह है रूहानी पढ़ाई। वह होती है जिसमानी पढ़ाई। वह अपने को शरीर समझते हैं। ऐसे कोई नहीं कहेंगे हम आत्मा इन द्वारा सुनते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो। बाप है पतित-पावन। वही आकर समझाते हैं मैं कैसे आता हूं। तुम्हारे मिसल मैं गर्भ में नहीं आता हूं। मैं इनमें में प्रवेश करता हूं। फिर कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यह रथ है। इनको माता भी कहा जाता है। सबसे बड़ी नदी ब्रह्मपुत्री है तो यह है सभी से बड़ी नदी। पानी की तो बात ही नहीं। यह है महानदी अर्थात सबसे बड़ी। ज्ञान नदी है। तो बाप आत्माओं को समझाते हैं मैं तुम्हारा बाप हूं। तुम जैसे बात करते हो मैं भी बात करता हूं। मेरा पार्ट तो सभी से पिछाड़ी का है। जब तुम बिल्कुल पतित बन जाते हो तब मेरा आना होता है। तुमको वारस बनाने लिये आना होता है। इन ल०ना० को ऐसा बनाने वाला कौन? सिवाय ईश्वर के और कोई के लिये नहीं कह सकेंगे। बेहद का बाप ही स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। भगवान ही स्वर्ग नई दुनिया स्थापन करते हैं ना। उसको सतोप्रधान दुनिया कहा जाता है। इनको पुरानी तमोप्रधान दुनिया कहा जाता है। तो जरूर सतोप्रधान कोई तो बनाते होंगे ना। बाप ही ज्ञान का सागर है। वही कहते हैं मैं इस मनुष्य सृष्टि का बीज रूप हूं। मैं आद मध्य अन्त को जानता हूं। मैं सत हूं चैतन्य हूं। मैं चैतन्य बीज रूप हूं। इस सृष्टि रूपी सारे झाड़ की मैं में नालेज है। इनको सृष्टि चक्र अथवा ड्रामा कहा जाता है। यह फिरता ही रहता है। वह हद का ड्रामा दो घंटा चलता है। इनका रील 5000 वर्ष का है। जो जो टाईम पास होता जाता है 5000 वर्ष से कम होता जाता है। तुम जानते हो पहले हम देवी देवता थे। फिर आहिस्ते आहिस्ते हम क्षत्री कुल में आ गये। यह सारा राज़ बुधि में है ना। तो यह सभी सुमिरण करते रहना चाहिए। हम शुरू2 में पार्ट बजाने आये तो हम सो देवता थे। 1250 वर्ष राज्य किया। टाईम तो गुजरता जाता है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। लाखों वर्ष का क्रोड़ तो कोई चिन्तन कर भी न सके। तुम समझते हो हम यह देवी देवता थे। फिर पार्ट बजाते आये। वर्ष पिछाड़ी वर्ष पास करते2 अभी 4900 वर्ष पास कर चुके हैं। पार्ट बजाते आये। सुखकम होता गया। हरेक चीज सतोप्रधान सतो रजो तमो होती है। पूरानी जरूर होती है। यह फिर है बेहद की बात। यह सभी बातें अच्छी रीत बुधि में धारण कर औरों को समझाना है। सभी तो एक जैसे नहीं होते। जरूर भिन्न2 रीति समझाते होंगे। चक्र पर समझाना सबसे सहज है। ड्रामा और झाड़ दोनों मुख्य चित्र हैं। कल्प वृक्ष नाम है ना। कल्प की आयु कितने वर्ष की है यह कोई भी नहीं जानते। मनुष्यों की तो अनेक मतें हैं। कोई क्या कहेंगे कोई क्या कहेंगे। अभी तुमने अनेक मनुष्यमत को भी समझा है। और एक ईश्वरीय मत को भी समझा है। कितना फर्क है। ईश्वरीय मत से तुमको फिर से नई दुनिया में जाना पड़े। और कोई की मत से तुम वापस जा नहीं सकते हो। दैवीमत वा मनुष्यमत से वापस नहीं जाते। दैवीमत से भी तुम उतरते ही हो। क्योंकि कला कम होती जाती है। आसुरी मत से भी उतरे हो। परन्तु दैवीमत में सुख है आसुरी मत में दुःख है। दैवी मत भी इस समय बाप को दी हुई है इसलिये तुम सुखी रहते हो। बेहद का बाप कितना दूर से आते हैं। मनुष्य कमाने लिये बाहर जाते हैं। जब बहुत धन इकट्ठा होता है तो फिर आते हैं। बाप भी कहते हैं मैं तुम बच्चों के लिये बहुत खजाना ले आता हूं। क्योंकि जानता हूं तुमको बहुत माल दिये थे। वह सभी तुम ने गंवा दिया। तुम से ही बात करता हूं। जिन्होंने प्रैक्टीकल में गंवाया है। 5000 वर्ष की बात है तुमको याद है ना। कहते हैं हां बाबा 5000 वर्ष पहले आप से मिले थे। आप ने वरसा दिया था। अभी तुमको स्मृति आई है। बराबर

9-12-52

बेहद के बाप से बेहद का वरसा लिया था। बाबा अप से नई दुनिया की राजाई का वरसा लिया था। अच्छा फिर पुरुषार्थ करो। ऐसे नहीं कहो बाबा माया के भूत ने हमकोहरा दिया। देहअभिमान के बाद ही तुम माया से हराते हो। लोभकिया रिश्वत खाई। लाचारी की बात और है। बाबा जानते हैं लोभ के सिवाय पेट की पूजा नहीं होगी। हर्जा नहीं। भल खाओ परन्तु कहीं फंस न मरना फिर तुमको ही दुःख होगा। पैसा मिलेगा खुश हो जावेंगे। कहीं पुलिस ने पकड़ लिया जेल में जाना पड़ेगा। ऐसा काम न करो। इसका फिर रेसपान्सीबुल मैं नहीं हूं। पाप करते हैं तो जेल में जाते हैं। वहां तो जेल आदि होतानहीं। तो ड्रामा के पलेनअनुसार जो कल्प पहले तुमको वरसा मिला है 21 जन्म लिये वैसे ही फिर लेंगे। सारी राजधानी बनती है। गरीब प्रजा, साहूकार प्रजा। परन्तु वहां दुःख होता नहीं। यह बाप गैरन्टी करते हैं। सभी एक समान तो बन न सके। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राजाई में सभी चाहिए ना। बच्चे जानते हैं हैं कैसे बाप हमको विश्व की बादशाही देते हैं फिर उतरते हैं। स्मृति में आया ना। यहां भी बाप स्मृति दिलाते हैं। यह रूहानी पढ़ाई दुनिया भर में और कोई पढ़ा न सके। गीता में भी लगा हुआ है मनमनाभव। इनको महामंत्र वसीकरण मंत्र कहते हैं। अर्थात माया पर जीत पाने का मंत्र। माया जीत जगत जीत। माया 5 विकार हो जाता है। रावण का चित्र बिल्कुल क्लीयर है। 5 विकार स्त्री में 5 विकार पुरुष में। इनसे गदहे अर्थात टट्टू बन जाते हैं। इसलिये ऊपर में गदहे का शीश देते हैं। अभी तुम समझते हो ज्ञान बि= विगर हम भी गदहे थे। फिर अभी गाड बनते हैं। बापकितना रमणीक बातें बैठ पढ़ाते हैं। वह फिर औरों को सुनाते हैं। पहले तो पढ़ाने वाले का निश्चय कराना चाहिए। बोलो बाप ने हमको यह समझाया है। अभी मानो न मानो। यह बेहद का बाप तो है ना। श्रीमत से श्रेष्ट बनाते हैं तो श्रेष्ट नई दुनिया भी जरूर चाहिएना। अभी तुम समझते हो हम स्लम (किचड़े की दुनिया) में बैठे हैं। दूसरा कोई समझ न सके। वहां हम बहिश्त स्वर्ग में सदा सुखी रहते हैं। यहां नर्क में कितनी दुःख है। इनको स्लम वा विषय वैतरणी नदी कहा जाता है। पुरानी छी छी दुनिया है। अभी तुम फील करते हो कहां सतयुग स्वर्ग कहां कलियुगी नर्क। नर्क को स्लम कहेंगे। वेश्यालय है। स्वर्ग को कहा जाता है वन्डर आफ वर्ल्ड। त्रेता को भी नहीं कहेंगे। यहां इस गंदी दुनिया में रहने में मनुष्यों को कितनी खुशी होती है। विष्टा के कीड़ों को भ्रमर= भ्रमरी भूं2 कर आपसमान= बनाती है।। तुम किचड़े में परे हुये थे। मैं आकर तुमको भूं2 कर तुमको कीड़े से अतिशूद्र से ब्राह्मण बनाया है, अभी तुम डबल बि=सिरताज बनते हो। तो कितनी खुशी रहनी चाहिए। पुरुषार्थ भी पूरा करना चाहिए। बेहद का बाप समझानी तो बहुत सहज देते हैं। दिल से लगता भी है बाबा सच्च2 कहते हैं। उनको अपने घर में ले आते हो। कई तुमको कहते हैं यहां आकर हमको समझाओ। तुम समझते हो हम हैं विषय सागर में गोता खाने वाले=कीड़ों को निकालने वाले। माया के दुवण में फंस मरे हैं। शो कितना है। बाप समझाते हैं हम आकर तुमको दुवण से बचाते हैं। स्वर्ग में ले जाते हैं। स्वर्ग का नाम सुनाहुआ है। अभी स्वर्ग तो है नहीं। सिर्फ यह चित्र है। यह स्वर्ग के मालिक, कितने धनवान थे। भक्ति मार्ग में भतेरे मंदिरों में जाते हैं थे परन्तु यह ज्ञान कुछ नहीं था। अभी तुम समझते हो भारत में यह अवश्यह आदि सनातन देवी देवताधर्म था। इन्हों का राज्य कब था यहकिसको भी पता नहीं है। देवी देवताओं के बदली हिन्दु कहते रहते हैं। शुरू में हिन्दु महासभा का प्रजीडेन्ट सावरकर आया था। बोला हम विकारी असुर हैं अपन को देवी देवता कैसे कहलावें। हमने कहा अच्छा आओ तो तुमको समझावें। देवी देवता धर्म की स्थापना फिर से हो रही है। हम तुमको स्वर्ग के मालिक बना देंगे। बैठ कर सिखो। बोला दादा फर्स्त कहां। फर्स्त नहीं तो फिर देवता कैसे बनेंगे। यह पढ़ाई है ना। विचारे के तकदीर में नहीं है। मर गया। ऐसे भी नहीं कहेंगे वह कोई प्रजा में आवेंगे। नहीं। ऐसे ही चला आया था। सुना था यहां पवित्रता काइन्न मिलता है। परन्तु आ न सके। फिर भी हिन्दुधर्म में ही आवेंगे। सतयुग के आदि सनातन देवी देवता धर्म में नहीं आवेंगे। ऐसे बहुत हैं। भल अभी हिन्दुधर्म में है परन्तु आवेंगे यहां से सुनकर फिर हिन्दुधर्म में गये हैं।

माया बड़ी प्रबल है। अभी तुम बच्चे समझ गये हो हम आत्माओं का बाप है। उनको भी दिल की बात न बतावेंगे तो फिर उल्टा सुल्टा पाप होता रहेगा। रावण की दुनिया में तो पाप होते ही रहते हैं। कहते हैं हम जन्म जन्मान्तर के पापी हैं। यह किसने कहा? आत्मा कहती है। बाप के आगे या देवताओं के आगे। अभी तुम फील करते हो बराबर हम जन्मजन्मान्तर के पापी थे। रावण राज्य में पाप जरूर किये हैं। अनेक जन्मों के पाप तो वर्णन नहीं कर सकते हैं। इस जन्म का वर्णन कर सकते हैं। वह सुनाने से भी हल्का हो जावेगा। सर्जन के आगे बिमारी सच्ची सुनानी है। फलाने को मारा चोरी की, इसको सुनाने में लज्जा नहीं आती है। विकार की बात सुनाने में लज्जा आती है। सर्जन से लज्जा करेंगे तो बिमारी छूटेगी कैसे। फिर अन्दर दिल को खाती रहेगी। बाप को याद कर न सकेंगे। सच्च सुनावेंगे तो याद कर सकेंगे बहुत। बाप कहते हैं मैं सर्जन तुम्हारी कितनी दवाई करता हूं। तुम्हारी काया सदैव कंचन रहेगी। सर्जन को बताने से हल्का हो जाता है। कोई2 आपे ही लिख देते हैं। बाबा हमने जन्म जन्मान्तर पाप किये हैं। पापात्माओं की दुनिया में पापात्माएं बने हैं। पापात्मा पापात्मा साथ ही लेन-देन करती हैं। विकारी विकारियों को दान करेंगे। तो विकारी ही बनेंगे ना। सन्यासी लोगों को कितने पैसे देते हैं। बहुत विकारियों का खाया है तो वह भी बहुत विकारी बन पड़े हैं। इसलिये उन्हों का नाम ही रखा है हिरण्यकश्यप। इन्होंने तुमको गिराया है। अनेक गुरु लोग हैं जो तुमको भक्ति मार्ग की बातें ही सुनाते रहते हैं। गुरु लोग तुमको गिराते2 नीचे ही ले आये हैं। अब बाप कहते हैं इन कलियुगी गुरुओं को छोड़ो। गोली मारो। मैं तुम्हारा सद्गुरु हूं। सद्गुरु अकाल मूर्त कहते हैं ना। अकाल अर्थात जिसको काल खा न सके। वह तो आत्मा है। सच्चा सद्गुरु अकाल मूर्त है बाप। वह कब पुनर्जन्म में आते नहीं। उन्होंने अकाल तख्त नाम रखा है। परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। बाप ने समझाया है आत्मा का यह तख्त है। शोभा भी यहां है। तिलक भी यहां देते हैं ना। असल में तिलक एकदम बिन्दी मिस्ल देते हैं। अभी तुमको अपने को आपेही तिलक देना है। बाप को याद करते रहो। जो बहुत सर्विस करेंगे तो बड़ा महाराजा बनेंगे नई दुनिया में। पुरानी दुनिया के लिये थोड़ेही पढ़ना है। तो इतनी ऊंच पढ़ाई पर अटेन्शन देना चाहिए। यहां बैठते हो तो भी कोई का बुधि योग अच्छा रहता है कोई2 का कहां2 चला जाता है। कोई 10 मिनट लिखते हैं कोई 5 मिनट लिखते हैं। जिसका चार्ट अच्छा होगा उनको नशा चढ़ेगा बाबा इतना समय हम आप की याद में रहे। 5 मिनट से जास्ती तो कोई लिख नहीं सकते। बुधि इधर-उधर भागती है। अगर समीप्रस हो जाये तो फिर कर्मातीत अवस्था हो जाये। बाप कितनी मीठी मीठी लवली बातें सुनाते हैं। ऐसे तो कोई सुनाने सके। बाप ही आकर इस रथ में प्रवेश करते हैं। यह कहते हैं मैं कोई पंडित आदि नहीं था। न कोई गुरु ने सिखाया। गुरु से सिर्फ एक थोड़ेही सिखेगा। गुरु से तो हजारों सीखे होंगे। सद्गुरु से तुम कितने सीखते हो। यह माया को वश करने का मंत्र है। माया 5 विकारों को कहा जाता है। धन को सम्पति कहा जाता है। ल०ना० के लिये कहेंगे इन्हों के पास बहुत सम्पति है। ल०ना० को कब माता पिता नहीं कहेंगे। आदि देव आदिदेवी को जगत पिता जगत अम्बा कहते हैं। इनको नहीं। यह तो स्वर्ग के मालिक हैं। अविनाशी ज्ञान धन लेकर यह इतने धनवान बने हैं। अम्बा के पास अनेक आशायें लेकर जाते हैं। ल०के पास सिर्फ धन के लिये जाते हैं। और कुछ नहीं। तो बड़ी कौन हुई ? यह किसको भी पता अम्बा से क्या मिलता है। लक्ष्मी से क्या मिलता है। लक्ष्मी से सिर्फ धन मांगते हैं। अम्बा से तुमको सभी कुछ मिलता है। अम्बा का नाम जास्ती है। क्योंकि माताओं को दुःख भी जास्ती सहन करना पड़ा है तो माताओं का नाम जास्ती होता है। अच्छा फिर भी बाप कहते हैं बाप को याद करो तो पावन बन जायेंगे। और चक्र को याद करो। दैवी गुण धारण करो। बहुतों को आप समान बनाओ। गाड फादर के तुम स्टुडन्ट हो। कल्प पहले भी बने थे। फिर अब अब भी वही एमआबजेक्ट है। यह है सत्य नर से ना० बनने की कथा। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।